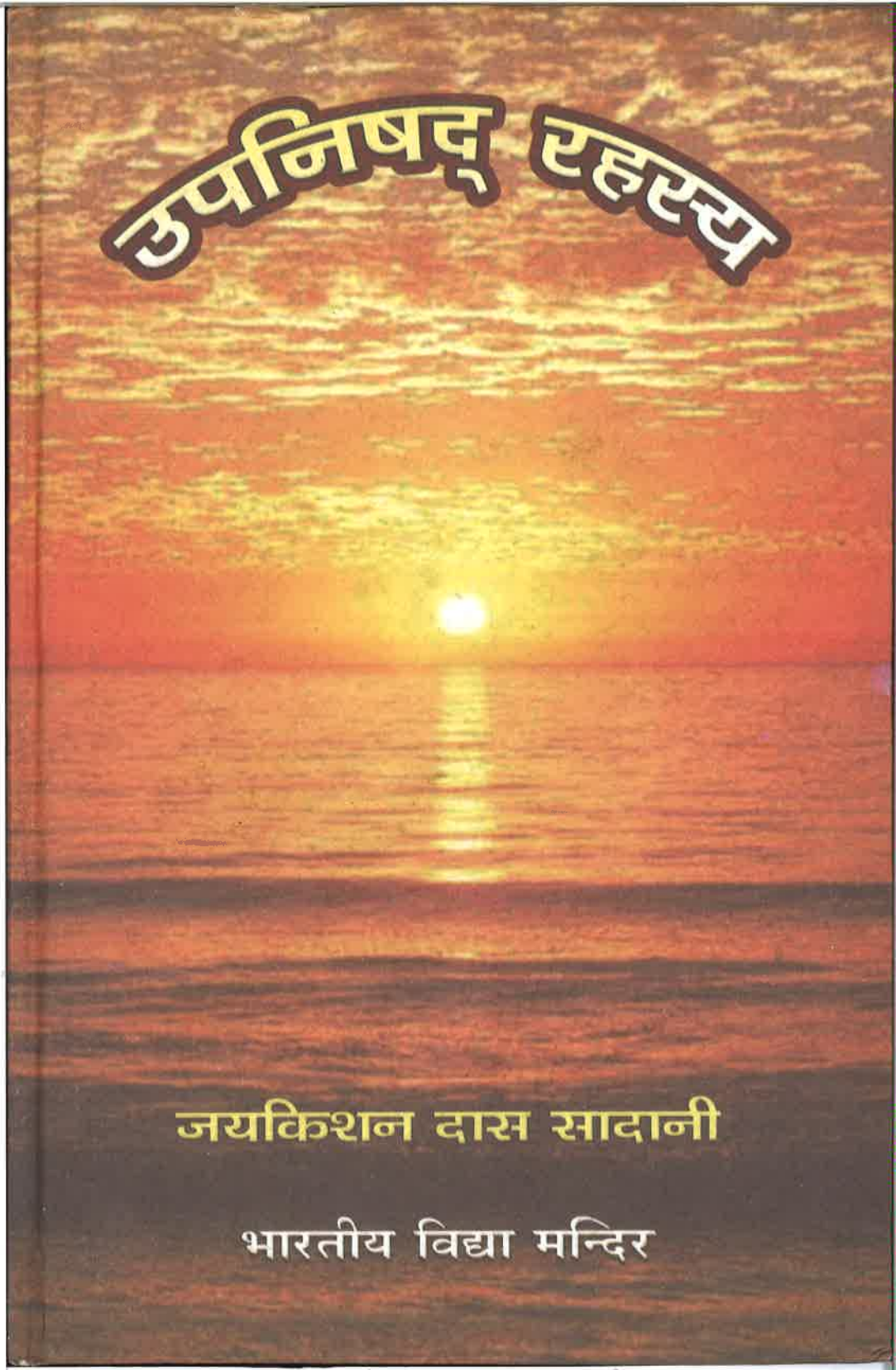
उपनिषद् रहस्य
जयकिशन दास सादानी
भारतीय विद्या मन्दिर

प्राक्कथन

भारतीय संस्कृति में अभिरुचि रखनेवालों के लिए उपनिषदों की कहानियों की पुस्तक प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है । हमारी यह प्राचीन समृद्ध परम्परा रही है कि सूक्ष्म और दार्शनिक एवं तर्क सम्मत जटिल विचारों को समझाने के लिए कहानियों और रूपकात्मक घटनाओं का प्रयोग किया जाय । सूक्ष्म और गहन चिन्तन को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की यह विधा रही है । इस पद्धति का वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण और महाभारत में विपुल प्रयोग हुआ है । यह तो भारत के प्राचीन ज्ञान की कुंजी है, लेकिन ज्ञान को जन-जन के सामने लाना आवश्यक है और वह भी उस शैली में जिसे सभी सहज रूप से समझ पाएं । इसी दिशा में यह प्रयास है ।

अच्छी कहानी के लिए यह आवश्यक है कि उसकी प्रस्तुति भी सुरुचिपूर्ण हो । उसमें अभिरुचि निरन्तर रहनी चाहिए । उसका शैक्षणिक तत्त्व मात्र अन्तर प्रवाह की तरह न रहकर उसका बहिर्गमन भी हो । मूल लेखक के लिए भी इसको बनाए रखना कठिन है और जो कथानक की पुनःरचना करते हैं उनके लिए तो यह और भी कठिन है । एक नए रूप में कहानी को प्रस्तुत करना जिसमें वह मूल कहानी से रंचमात्र भी भिन्न न हो और इसके उपरांत वह कहानी एक स्वतंत्र कहानी की तरह लगे अपने आप में चुनौती भरा कार्य है । इसके लिए पूरी कल्पनाशीलता के साथ मौलिक की अभिव्यक्ति करनी होती है । श्री जयकिशनदास सादानी ने इन दोनों कार्यों का पूर्ण रूप से निर्वाह किया है । इस पुस्तक में उपनिषदों की कहानियों को उन्होंने पूर्ण रूपेण अभिव्यक्त किया है और उनमें वर्णित उद्‌भावनाओं को बड़े मनोयोग के साथ प्रस्तुत किया है ।

यह खेद जनक हो सकता है लेकिन यह वस्तु स्थिति है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी अपनी जड़ों से द्रुत गति से दूर होती जा रही है । उसे अपनी अस्मिता की ओर

मोड़ना व उससे परिचित कराना अत्यन्त आवश्यक है । उपदेश एक सामान्य साधन हो सकता है लेकिन इससे उनमें आस्था बनाना कठिन है, विरोध की संभावनाएँ अधिक हैं । अतः परोक्ष रूप से न कहकर अपरोक्ष रूप में कहना ही अधिक उत्तम व सफल रहता है । वर्तमान पीढ़ी को प्राचीन ज्ञान का रसास्वादन कराना हो तो उसे इस रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जिसे वह सहज रूप में आत्मसात् कर लाभान्वित हो सके ।

इस पुस्तक का पहले अंग्रेजी में प्रकाशन हुआ था और अब हिन्दी में हो रहा है जिससे कहानियों का मर्म समाज के उन लोगों तक भी पहुँच जाय जो संस्कृत साहित्य और उसकी समग्रता से परिचित न हों । यह तभी संभव हो सकता है जब हम इस विशाल साहित्य में से ऐसे उदात्त संदर्भों को उनके लिए रोचक पद्धति से प्रस्तुत करें जिससे वे इसका आनंद ले सकें । यदि ऐसा संभव होता है तो यह पुस्तक अपने कार्य में सफल होती है ।

वेदों के अंतिम भाग होने के कारण उपनिषदों को वेदान्त कहा जाता है । वे तो वास्तव में चिंतन करने की पद्धति प्रस्तुत करते हैं । वेदों में ज्ञान काण्ड, कर्मकाण्ड व इसके पूर्व में रचित संहिता और ब्राह्मण और तत्पश्चात् आरण्यकों से उपनिषद् भिन्न हैं । उपनिषदों में शिष्य, गुरु के समीप बैठते हैं । उपनिषद् शब्द का अर्थ है - उप+नि+सद् या निकट बैठना । यहाँ गुरु शिष्यों को उदात्त दार्शनिक चिन्तन करने की पद्धति और इनमें निहित गूढ़ प्रश्नों का अर्थ समझाते हैं । इन कहानियों में अनेक गुरु और शिष्यों का संवाद बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत हुआ है । इसे आधुनिक शिक्षा पद्धति भी अपनाती है । विषय की गंभीरता के कारण इसके निगूढ़ रहस्य को समझाने में कभी-कभी कठिनाई प्रतीत होती है । अतः इसे स्पष्ट करने के लिए वे उन्हें कथाओं, रूपकों एवं उदाहरणों द्वारा पढ़ाते थे । ये कहानियाँ सर्वथा मिथकीय नहीं हैं । ये वास्तव में उन घटनाओं को विवेचित करती हैं जो परंपरा से प्राप्त हुई हैं । वे सामाजिक स्तर पर महत्त्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से समाजशास्त्रियों के लिए । ये कहानियाँ मानव के कई पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं । जैसे सत्यकाम जाबाली कोई काल्पनिक पात्र हो यह जरूरी नहीं है । हो सकता है कि वह उस युग की बची हुई परम्परा से जुड़ा हुआ हो जहाँ समाज में एक पुरुष

और एक नारी का सम्बन्ध सामाजिक स्तर पर आवश्यक न माना जाता हो । यहाँ जन्म के आधार पर वर्ण निश्चित न होकर गुणों पर आधारित था । वैसे ही श्वेतकेतु, पिता के अत्यधिक प्रेम के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहा था अतः उसे ज्ञान प्राप्ति के लिए अन्य गुरु के पास भेजना आवश्यक हो गया था । अनेक विषयों की शिक्षा एवं निपुणता प्राप्त करने के कारण उसे दंभ और अभिमान हो जाता है जो आवश्यक ज्ञान प्राप्ति के लिए बाधक होता है । अतः इसे मिटाना बहुत ज़रूरी हो गया था । पिता आरुणि एवं श्वेतकेतु का संवाद उल्लेखनीय है । इसी प्रकार संवाद एवं उपदेश द्वारा परम आध्यात्मिक तत्त्व गुरु द्वारा शिष्य को समझाया जाता था जिसका सामाजिक, दार्शनिक और नैतिक मूल्य जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । उपनिषदों की कहानियों में प्रतिपादित ज्ञान अमूल्य धरोहर के रूप में हमें प्राप्त हुआ है, जिसने परवर्ती काल में पुष्पित और विकसित साहित्य का रूप ले लिया । सूक्ष्म और संक्षिप्त संवादों में विवेचित सत्य देश और काल की सीमा लांघ जाता है । श्री जयकिशनदास सादानी, जिन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, में यह विशेषता है कि वे प्राचीन को नवीनतम रूप में प्रस्तुत करते हैं । उनकी प्रांजल कलम न केवल सर्जन करती है अपितु प्राचीन का नवीन रूप में पुनःसर्जन कर देती है । यह क्षमता इस पुस्तक में पर्याप्त रूप में उभरी है । उपनिषद् की कहानियों को पुनः उस रूप में प्रस्तुत किया गया है जिससे उनमें नवीन अर्थवत्ता आ गयी है । इन्हें पढ़ना बड़ा ही सुखद रहा । यह एक कलाकृति होने के कारण सदा आनन्द प्रदान करती रहेगी ।

- सत्यव्रत शास्त्री
प्रोफेसर संस्कृत, दिल्ली विश्वविद्यालय,
भू.पू. कुलपति : श्री जगन्नाथ विश्व विद्यालय,
पुरी, उड़ीसा